प्रश्न—अरस्तू का 'विरेचन सिद्धान्त' क्या है ? समझाइए.

उत्तर—अरस्तू द्वारा प्रतिपादित विरेचन सिद्धान्त भी अनुकरण सिद्धान्त की भाँति प्लेटो द्वारा काव्य पर किए गए आक्षेप का प्रतिवाद रूप है. प्लेटो ने काव्य-कला को आदर्श राज्य के लिए अनुपयोगी बताया. अरस्तू ने प्लेटो के सिद्धान्त का विरोध करते हुए विरेचन सिद्धान्त निरूपित किया. इस तरह अरस्तू ने विरेचन सिद्धान्त के द्वारा काव्य के उद्देश्य एवं प्रभाव की समुचित प्रतिष्ठा करते हुए त्रासदी अर्थात् करुण भाव की उद्‌बुद्धि के आस्वाद रूप की समीचीन व्याख्या प्रस्तुत की. अरस्तू के अनुसार त्रासदी के मूलभाव भावों को

Scanned with CamScanner

उद्‌बुद्ध कर विरेचन पद्धति के द्वारा मानव-मन का परिष्कार करते हैं; जैसे-विरेचन से शरीर शुद्धि होती है.

विरेचन का अर्थ–यूनान की चिकित्सा पद्धति में विरेचन (Katharsis) की चर्चा आयी है. अरस्तू के द्वारा इसके प्रयोग का कारण यह प्रतीत होता है कि अरस्तू के पिता मेसेडोनिया के राज्य चिकित्सक थे और अरस्तू ने स्वयं भी चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त की थी. भारतीय चिकित्सा पद्धति में भी विरेचन का महत्व है जिसका सामान्य अर्थ है रेचक द्रव्यों द्वारा शरीर के मल, अनावश्यक हानिकारक, स्वास्थ्य अहितकर तत्वों और पदार्थों को शरीर से बाहर निकालना. इस प्रकार 'रेचक' का आशय शारीरिक' या उदर विकारों की शुद्धि करना है. अरस्तू में 'विरेचन' का लाक्षणिक अर्थ लिया है और भावों के द्वारा मनोविकारों की शुद्धि के लिए इसे उपयोगी बताया है.

विरेचन की व्याख्या–अरस्तू के अनुसार विरेचन के द्वारा वास्तविक जीवन की करुणा और त्रास का निष्कासन किया जाता है. लाक्षणिकता के आधार पर परवर्ती व्याख्याकारों ने विरेचन के तीन प्रकार के अर्थ किए हैं–1. धर्मपरक, 2. नीतिपरक और 3. कलापरक.

1. **धर्मपरक व्याख्या**–प्रो. मरे के अनुसार यूनान में दिओन्युसस देवता के उत्सव की प्रथा वर्षारम्भ में प्रचलित थी. इसमें प्रार्थना द्वारा पाप की शुद्धि की योजना थी. एक दूसरे विद्वान लिवी के अनुसार, "त्रासदी की अवधारणा यूनानी अंधविश्वास पर आधारित है. उनकी धारणा थी कि ये उत्सव विपत्तियों का नाश करते हैं. अरस्तू ने भी यह स्वीकार किया है–(राजनीति)." हाल की स्थिति से उत्पन्न आवेग के शमन के लिए भी यूनान में उद्‌दाम संगीत का उपयोग किया जाता था, जो पहले आवेगों की वृद्धि करता था, फिर उन्हें शान्त कर देता था. इसी से अरस्तू को 'विरेचन' की प्रेरणा मिली.

2. **नीतिपरक व्याख्या**–वारनेज आदि जर्मन विद्वानों ने अरस्तू द्वारा प्रयुक्त 'विरेचन' शब्द की नीतिपरक व्याख्या करते हुए इसे मनोविकारों की उत्तेजना के पश्चात् उद्वेग का शमन एवं उससे उत्पन्न मानसिक प्रसन्नता बताया है. त्रासदीजनित करुणा और त्रास के भाव से दर्शकों के मन में इनके समान ही भाव जाग्रत होते हैं और दर्शक उद्वेलित हो उठते हैं. पर ये भाव शीघ्र ही शान्त हो जाते हैं. इस प्रकार दर्शक नाटक के रूप में ट्रेजेडी देखकर अथवा काव्य रूप में पढ़कर शांति का सुखद अनुभव करता है और उसके मन में करुणा और त्रास मनोवेगों का भय नहीं रह जाता.

3. **कलापरक व्याख्या**–जर्मन कवि गेटे और अंग्रेजी में रोमांटिक कवियों में विरेचन सिद्धान्त के कलापरक अर्थ के विशेष संकेत मिलते हैं. प्रो. बूचर का मत है "ट्रेजेडी का कर्तव्य-कर्म केवल करुणा या त्रास के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम प्रस्तुत करना नहीं, इन्हें एक सुनिश्चित कलात्मक

Scanned with CamScanner

परितोष प्रदान करना है, इनको कला के माध्यम से हटाकर परिष्कृत तथा स्पष्ट करना है." अतः विरेचन का अर्थ है पहले मानसिक सन्तुलन और बाद में कलात्मक परिष्कार.

4. **मानसिक व्याख्या**- जर्मन विद्वान् गारनेज के अनुसार, "मानव मन के अनेक मनोविकार वासना के रूप में स्थित रहते हैं. उन्हें दमित करने के बदले सन्तुलित करना वांछनीय है. उनमें करुणा और त्रास नामक मनोवेग मूलतः दुःखद होते हैं. त्रासदी रंगमंच पर ऐसे दृश्य प्रस्तुत करती है, जिसमें ये मनोवेग अतिरंजित रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं. उन्हें देखकर ये भाग पहले तो उद्वेलित होते हैं, तत्पश्चात् उपशमित हो जाते हैं. प्रेक्षक त्रासदी देखकर मानसिक शान्ति का सुखद अनुभव करता है, क्योंकि उसके मन में वासना रूप में स्थित करुणा तथा त्रास आदि मनोवेगों का दंश समाप्त हो जाता है." अतः विरेचन की मानसिक व्याख्या है, जिससे मनोविकारों के उत्तेजना के बाद उद्वेग का शमन होता है और तज्जन्य मानसिक विशदता से भावात्मक रुग्णता दूर हो जाती है.

विरेचन का स्वरूप- विरचन के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने मत प्रस्तुत किए हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(i) विरेचन से अरस्तू का आशय मनोवेगों के किसी-न-किसी प्रकार के विरेचन से था. ट्रेजेडी को देखने के बाद व्यक्ति जिस मनःस्थिति में आता है, वह आवेगों के विरेचन की ही देन होती है. अरस्तू के अनुसार ट्रेजेडी करुणा और त्रास के उद्रेक द्वारा तीन कार्य सम्पन्न करती है—नवीन दृष्टि देती है, कलास्वाद प्रदान करती है और चित्त को शान्त कर देती है.

(ii) विरेचन एक ऐसी त्रासदी सुख प्रदान करने वाली प्रक्रिया है, जो मनोभावों (करुणा व त्रास) का त्रासदी के पठन, श्रवण तथा प्रेक्षण से, अन्तर्निहितता की स्थिति से क्रियात्मकता की ओर उद्रेक करती है और उद्रेक किए हुए मनोभावों को पुनः उनकी गर्भित स्थिति में प्रतिष्ठित करती है. इस प्रकार करुणा और त्रास के मनोभावों के उद्रेक और शमन की प्रक्रिया ही विरेचन अथवा 'कैथारसिस' हुई.

Scanned with CamScanner